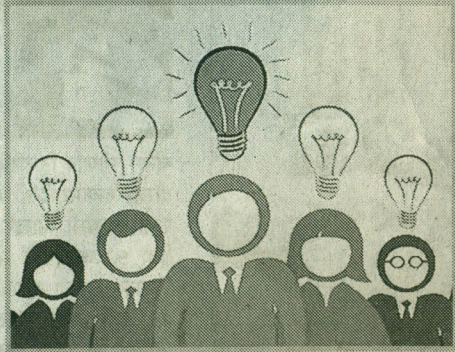


स्टार्टअप इंडिया के लिए खतरे की घंटी



अगर अंतरराष्ट्रीय मीडिया में आ रही खबरों को सच माने तो स्टार्टअप कंपनियों में वेंचर कैपिटलिस्ट, प्राइवेट इक्विटी प्लेयर्स, म्यूचुअल फंड्स आदि का निवेश पूरी दुनिया में कम हो रहा है। ऐसा नहीं है कि टी रो प्राइस ने सिर्फ फिलपकार्ट को झटका दिया है। उसने ऊबर समेत कई अमेरिकी स्टार्ट अप कंपनियों में भी अपना शेयर कम किया है। इसका मतलब यह है कि बाजार के ये बड़े खिलाड़ी स्टार्टअप्स को लेकर बहुत उत्साहित नहीं हैं। यह साफ नजर आता है कि स्टार्टअप कंपनियों ने अपने विस्तार का रास्ता नहीं ढूँढा। सामानों की खरीद-फरोख्त के प्लैटफॉर्म का मॉडल हमारे सामने था और हर कोई इस मॉडल को अपनाते हुए उसको भुनाना चाहता था।

भारतीय स्टार्ट अप कंपनियों के लिए आदर्श रही ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट के लिए यह किसी झटके से कम नहीं था। इसके पहले मॉर्गन स्टैनली ने भी फ्लिपकार्ट में अपना शेयर पंद्रह फीसदी कम कर लिया था। फ्लिपकार्ट पर इसका सीधा असर दिखने लगा है। बड़े संस्थानों से कैपस प्लेसमेंट के नाम पर मोटी सैलरी वाली नौकरियां देने के जो वादे इस कंपनी ने किए थे, वे स्थगित कर दिए गए हैं। फ्लिपकार्ट का उदाहरण यहां सिर्फ इसलिए दिया गया है कि वह भारतीय स्टार्ट अप इकोसिस्टम का एक बेहद अहम हिस्सा है। अगर हम स्टार्टअप में निवेश को देखें तो इस साल की पहली तिमाही में वेंचर कैपिटलिस्टिफ फंड पीई फंड्स ने डेढ़ अरब डॉलर का निवेश किया। यह पिछले तिमाही की तुलना में करीब 24 फीसदी कम है। निवेश के बारे में जानकारी रखने वालों का कहना है कि निवेश में इतनी ज्यादा गिरावट गंभीर चिंता की बात है

यह चिन्ता सिर्फ भारतीय कंपनियों के लिए नहीं है। एशिया में ही अगर हम देखें तो पिछली दो तिमाहियों से लगातार निवेश में भारी कमी दर्ज की गई है और ऐसा सन 2012 के बाद

स्टार्ट अप कंपनियों में भी अपना शेयर कम किया है। इसका मतलब यह है कि बाजार के ये बड़े खिलाड़ी स्टार्टअप्स को लेकर बहुत उत्साहित नहीं हैं। यह साफ नजर आता है कि स्टार्टअप कंपनियों ने अपने विस्तार का रास्ता नहीं ढूँढ़ा। सामानों की खरीद-फरोख्त के

जब हम अपनी बड़ी स्टार्टअप कंपनियों को देखते हैं तो पाते हैं कि उनमें से ज्यादातर इंटरनेट सॉफ्टवेयर सर्विसेज पर आधारित हैं। इसके अलावा अगर हम इजराइल की स्टार्ट अप कंपनियों को देखें तो वहां ज्यादातर कंपनियां साइबर सुरक्षा, स्वास्थ्य व सर्विस सेक्टर में हैं। वहां की स्टार्टअप कंपनियों की सफलता के पीछे स्टार्टअप क्षितिज का विस्तार है। केंद्र सरकार ने कई स्कीमों को बेहतर सोच के साथ शुरू किया, लेकिन उस सोच को जमीनी स्तर पर उतारना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। स्टार्ट अप इंडिया को सफल बनाने के लिए टैक्स आदि में छूट देना तो ठीक है, लेकिन इस स्कीम को स्किल इंडिया से जोड़कर कुछ नई योजनाओं को बढ़ावा देना होगा। सरकार को निवेशकों का भरोसा कायम रखने की दिशा में भी काम करना होगा। स्टार्ट अप्स के पास जो पैसा आ रहा है वह पैसा डिस्कान्ट के तौर पर ग्राहकों को देकर वे वॉल्यूम बढ़ाते हैं। निवेशकों को यह मॉडल सही नहीं लग रहा है। सरकार को स्टार्टअप का निवेश रेगुलेट करने के लिए भी कदम उठाने चाहिए।



पहली बार हो रहा है। अगर अंतरराष्ट्रीय मीडिया में आ रही खबरों को सच माने तो स्टार्टअप कंपनियों में वेंचर कैपिटलिस्ट, प्राइवेट इक्विटी प्लेयर्स, म्यूचुअल फंड्स आदि का निवेश पूरी दुनिया में कम हो रहा है। ऐसा नहीं है कि टी रो प्राइस ने सिर्फ फ्लिपकार्ट को झटका दिया है। उसने ऊबर समेत कई अमेरिकी

प्लैटफॉर्म का मॉडल हमारे सामने था और हर कोई इस मॉडल को अपनाते हुए उसको भुनाना चाहता था। हमारे यहां स्टार्ट अप में बहुत प्रयोग नहीं किए जा रहे हैं। नई तकनीक का विकास भी नहीं किया जा रहा।

यहां ज्यादातर स्टार्ट अप वैश्विक स्तर पर सफल हो चुकी कंपनियों के मॉडल की नकल